Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 5 | ISSN : 2582-0095

मार्कण्डेय के चारित्रिक पहलू का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ0 ममता मिश्रा
शोध–निर्देशिका, (सह–आचार्य / विभागाध्यक्ष)
हिन्दी विभाग,
नेहरू ग्राम भारती (मा0वि0वि0), प्रयागराज,
उत्तर प्रदेश।

दिलीप कुमार वर्मा
शोध–छात्र (हिन्दी)
हिन्दी विभाग,
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय),
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 3 Issue 5
Page Number : 115-119
Publication Issue :
September-October-2020
Article History
Accepted : 15 Oct 2020
Published : 26 Oct 2020

सारांश–स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य में मार्कण्डेय एक प्रमुख नाम है। वे एक प्रतिबद्ध रचनाकार है। उनका स्वभाव मृदु, भावुक तथा संवेदनशील बनता गया। उन्होंने अपने बाबा और माँ से सीखा कि गरीब और दीन–दुखियों तथा उपेक्षित समाज के प्रति सहानुभूति और प्रेम ही मनुष्य को महान बनाता है। माँ और बाबा के इन्हीं संस्कारों के फलस्वरूप आगे चलकर के एक सफल जनवादी तथा प्रतिबद्ध लेखक बन सके। उनका कथा साहित्य प्रगतिशील चेतना के आलोक में गतिशील हुआ है। मार्कण्डेय के व्यक्तित्व में गंभीरता, स्पष्टवादिता, स्वाभिमान, आत्मविश्वास, कल्पनाशीलता, मिलनसारिता, भावुकता, देशप्रेम आदि अनेक पहलुओं के दर्शन होते हैं जो उन्हें अन्यों से भिन्न स्थापित करते हैं।

मुख्य शब्द– कथा–साहित्य, प्रतिबिम्बित, ग्रामीण, धार्मिक जीवन, अंधविश्वास।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य में मार्कण्डेय एक प्रमुख नाम है। वे एक प्रतिबद्ध रचनाकार है। उनका कथा साहित्य प्रगतिशील चेतना के आलोक में गतिशील हुआ है। हिन्दी साहित्य के विद्वानों ने यशपाल, नागार्जुन, रांगेय राघव, भैरव प्रसाद गुप्त, अमृतराय, भीष्म साहनी, अमरकांत, जगदीशचन्द्र आदि के साथ उन्हें भी प्रेमचन्द के उत्तराधिकारी रचनाकार के रूप में मान्यता प्रदान की है। मार्कण्डेय हिंदी कथा साहित्य की यथार्थवादी धारा के प्रमुख सशक्त एवं समर्थ रचनाकार है। प्रेमचंदोत्तर कथा साहित्य में मार्कण्डेय का योगदान महत्त्वपूर्ण है। श्री मार्कण्डेय का जन्म 2 मई 1930 ई0 को उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले में केराकत तहसील के एक छोटे से गाँव बराई में एक साधारण किसान परिवार में हुआ। अपने बाबा के प्रथम पौत्र होने के कारण उनके जन्म से पूरे गाँव तथा परिवेश में उत्साह का वातावरण था। वाह्य दृष्टि से कोमल और मधुर व्यक्तित्व के धनी मार्कण्डेय का आन्तरिक व्यक्तित्व बड़ा ही कर्मठ और मँजा हुआ था। मार्कण्डेय के आन्तरिक व्यक्तित्व के निर्माण के लिए उनकी सामाजिक और राजनीतिक सक्रियता कारणभूत रही।

Copyright : © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

मार्कण्डेय अपने बाबा के प्रथम पौत्र थे। अतः बचपन से ही बड़े लाड भरी दृष्टि से देखे जाते थे। अपने बाबा से ही उन्हें प्रेम और उदारता के गुण विरासत में मिले। अपने बाबा का यह प्रेम और आत्मीयता मार्कण्डेय के कथा– संसार में बिखरी पड़ी है। इन्हीं दो विशेषताओं ने तथा वरिष्ठों के लाड–प्यार ने उनके व्यक्तित्व को नितान्त कोमल बना दिया है। उनका स्वभाव मृदु, भावुक तथा संवेदनशील बनता गया। उन्होंने अपने बाबा और माँ से सीखा कि गरीब और दीन–दुखियों तथा उपेक्षित समाज के प्रति सहानुभूति और प्रेम ही मनुष्य को महान बनाता है। माँ और बाबा के इन्हीं संस्कारों के फलस्वरूप आगे चलकर के एक सफल जनवादी तथा प्रतिबद्ध लेखक बन सके।

(क) निर्भीकता और जुझारूपन– मार्कण्डेय के व्यक्तित्व में कुछ परस्पर विरोधी विशेषताएँ घुली–मिली है। एक ओर जहाँ आरम्भ से ही उनका व्यक्तित्व कोमलरहा है, वही दूसरी ओर जन–सामान्य पर होने वाले अन्याय दमन को देकर उनके भीतर का इन्सान क्रुद्ध भी हो उठा है। किसानों और मजदूरों की दुर्दशा को देखकर उन्होंने बचपन से ही ठान लिया था कि वे पढ़–लिखकर नौकरी नहीं करेंगे, बल्कि शोषित के हक के लिए लड़ेंगे। यही कारण है कि तत्कालीन लोकप्रिय समाजवादी नेता आचार्य नरेन्द्र देव की कांग्रेस समाजवादी पार्टी से जुड़कर राजनीति में सक्रिय हो गये। प्रतापगढ़ के सुदूर गाँवों में जाकर तथा मंच पर भाषण देकर लोगों में जमींदार, सामंत तथा ताल्लुकेदारों के खिलाफ क्रान्ति की चेतना जगाते रहे। उनके धाराप्रवाह भाषण सुनकर गाँव के लोग मंत्र–मुग्ध हो जाते थे। यों अपनी युवावस्था में ही मार्कण्डेय ने निर्भीकता, जुझारूपन तथा प्रखर नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया। यहीं दूसरी बात है कि आगे चलकर पार्टी में वैचारिक मतभेद के कारण पार्टी से दूर हो गए। परन्तु उन्होंने मार्क्सवादी विचारधारा के आलोक में साहित्य के माध्यम से अपना कार्य आगे भी बरकरार रखा।

(ख) ईमानदारी और सत्यवादिता– मार्कण्डेय सर्वहारा वर्ग के किसान, मजदूरों की विकास–कामना के प्रति समर्पित रचनाकार हैं। वे आरम्भ से ही सत्य के प्रखर पक्षधर रहे हैं। उनके मत से प्रबुद्ध लोग सच्चाइयों से आँख नहीं चुराते। उनका व्यक्तिगत जीवन विचारों के आड़े नहीं आता। लाभ–हानि की चिंता रखकर कदम उठाने वाले लोगों की कभी पहचान नहीं बनती। वे सदा भयग्रस्त बने रहते हैं। अपने लौकिक जीवन में उन्होंने सत्य और प्रामाणिकता को सर्वोपरि माना है। यही कारण है कि स्वतंत्रता के पूर्ववर्ती काल में विद्यार्थी दशा में जब प्रतापगढ़ के प्रतापबहादुर कॉलेज में एक दिन तिरंगे झंडे के साथ पकड़े गये और प्रिंसिपल के पूछे जाने पर कि तिरंगा कहाँ से मिला, तब सत्यनिष्ठ छात्र मार्कण्डेय ने बताया था कि तिरंगा झंडा उनके बाबा का दिया हुआ है। अंग्रेजों के सम्मुख बिना डरे सही–सही उत्तर देना उनकी सत्यवादिता और निर्भीकता का परिचायक है। ऐसे अनेक उदाहरण उनके आगे के जीवन में भी दृष्टिगोचर होते हैं।

(ग) विद्रोही और संघर्षशीलता– उत्तर प्रदेश के बराई जैसे एक देहात में सामान्य किसान परिवार में जन्म लेकर भी मार्कण्डेय के भीतर का इन्सान हमेशा रूढ़िवादिता और शोषण के खिलाफ खड़ा दिखाई देता है। स्वयं ठाकुर परिवार में जन्म लेने के बावजूद वे ठाकुरशाही और सामंती मानसिकता से आजीवन लड़ते रहे। महाविद्यालयीन पढ़ाई के दौरान प्रतापगढ़ में चलने वाले किसान आन्दोलन से संबद्ध रहे। अवध की ताल्लुकदारी में किसान का भयावह शोषण देखकर मार्कण्डेय ने अपनी अनेक कहानियों के माध्यम से इस प्रवृत्ति पर मार्मिक प्रहार किए हैं। ऐसा करते हुए मार्कण्डेय जी ने एक सच्चे साहित्यकार की प्रतिबद्धता का परिचय दिया है। उनका यही गुण उन्हें असाधारण

बना देता है। वे चाहते तो जिन्दगी भर अपनी ठसक के साथ रह सकते थे। किन्तु वे गरीब, अभावग्रस्त, दुःखी तथा उपेक्षित ग्रामीणों की मुक्ति को ही अपने जीवन और साहित्य का एकमात्र लक्ष्य मानकर चले हैं। ऐसा करते हुए उन्होंने अनेक बार अपने संबंधियों से भी झगड़ा मोल लिया है। उनके अनुसार साहित्य समाज की चेतना में परिवर्तन लाने का एक अस्त्र बन सकता है, लेकिन ऐसा तभी संभव है जब साहित्यकार तत्कालीन समाज की अवस्थाओं का वास्तविक निरूपण करें और यह देखें कि वे कौन–सी सांस्थानिक बाधाएँ हैं जो समाज के क्रान्तिकारी परिवर्तन को रोक रही हैं। विशेष रूप से भारत जैसे प्राचीन देश में जहाँ जाति, धर्म, अंधविश्वास, रूढ़ियाँ, वास्तविकताओं के निदर्शन में महानतम बाधाओं के रूप में उपस्थित है। वर्गीय समाज में ये बाधाएँ संघर्ष और अंतर्द्वन्द्व की तीव्रता को कम करती रहती है। साहित्यकार इन बाधाओं को हटाने में संघर्ष कर सकते हैं और मेरा विश्वास है कि उनका यह बहुत बड़ा क्रान्तिकारी कदम होगा।''

(घ) प्रतिबद्धता– प्रतिबद्धता मार्कण्डेय के भीतरी इन्सान और लेखक का स्थायी भाव है। उन्होंने शुरू से ही समझौतावादी दृष्टि नहीं अपनायी। जिन दिनों मार्कण्डेय की समझ विकसित हो रही थी, वह पराधीनता और गाँधीवादी आदर्शों का युग था। वे महात्मा गाँधी, पंडित नेहरू आदि देशभक्त नेताओं से वे प्रभावित अवश्य हुए किन्तु उनकी आस्था मार्क्सवादी विचारधारा के प्रति बनी रही। मार्कण्डेय की दृष्टि में मार्क्सवाद द्वारा प्रतिपादित वर्गहीन समाजवादी व्यवस्था ही देश के शोषित वर्ग को अन्याय और शोषण से मुक्ति दिला सकती है। क्योंकि समाजवादी विचारधारा में प्रत्येक व्यक्ति की उन्नति और विकास पर बल दिया गया है। समाजवाद में मानवजीवन के विकास के सभी द्वार खुले हैं। यही कारण है कि मार्कण्डेय जीवन के आरम्भ से ही आचार्य नरेन्द्र देव और पी.सी. जोशी जैसे समाजवादी विचारकों को ही अपने प्रेरणास्रोत रूपायित होने वाले सांस्कृतिक हस्तक्षेप को अपनी रचना का स्वभाव कहते मानते हैं। मार्कण्डेय ने पूरी जिंदगी केवल लेखन कार्य में ही व्यतीत की है। इसी कारण सरकार की दी हुई आकाशवाणी की नौकरी भी त्याग दी और इलाहाबाद में रहते हुए लेखन और 'कथा' पत्रिका के संपादन द्वारा जन–समाज का पथ–प्रदर्शन करते रहे। वे स्वावलंबन के नाम पर पुस्तक–प्रकाशन जैसा खतरे भरा व्यवसाय करते हुए जनवादी और प्रगतिशील आन्दोलन को आगे बढ़ाना चाहते थे और अंततः किया भी यही। ऐसा करते हुए दिल्ली से प्रकाशित तत्कालीन प्रसिद्ध पत्रिका 'नई कहानियाँ' के संपादन का स्वर्णिम अवसर भी ठुकरा दिया। उसकी प्रतिबद्धता की इससे बड़ी मिसाल और क्या हो सकती है?

वरिष्ठ कथाकार और मार्कण्डेय के समकालीन लेखक जो अमरकांत अपनी नवीनतम पुस्तक 'कुछ यादे कुछ बातें' में मार्कण्डेय को एक 'प्रतिबद्ध स्वप्नदर्शी' के रूप में याद करते हुए उनके निःस्वार्थ साहित्यिक अवदान को रेखांकित करते हैं।

(ङ) प्रसिद्धि से कोसो दूर– मार्कण्डेय एक समर्पणशील रचनाकार है। वे अपने वैयक्तिक जीवन में आरम्भ से ही प्रसिद्धि से दूर रहकर साहित्य–साधना करते रहे हैं। उनके जीवन की आरम्भिक घटनाओं–चाहे वह अवध की ताल्लुकदारी हो या फिर सामंती व्यवस्था में जन्म, उन्होंने शुरू से ही शोषित पीड़ित ग्रामीणों के हित में लेखन तथा कुछ सीमा तक सामाजिक कार्य किया है। परन्तु ऐसा करते हुए प्रसिद्धि और पद से हमेशा दूर रहे। इसके कई उदाहरण दिये जा सकते हैं। हिन्दी के एक वरिष्ठ कथाकार होने के बावजूद तथा इलाहाबाद जैसे साहित्यिक

गोष्ठियों के केन्द्रिय शहर में रहते हुए भी मार्कण्डेय हमेशा मंच पर बैठने की अपेक्षा सभागार के किसी कोने में बैठना पसंद करते हैं। उनके एक समकालीन आलोचक रामकमल राय के शब्दों में, अगर कहें, तो मार्कण्डेय जी को मंच पर बैठने का शौक नहीं है। सभागार के एक कोने में वे अपना आसन जमाते हैं। फिर उनके इर्द–गिर्द उनके प्रशंसकों का एक घेरा बैठ जाता है।

(च) सादगी और स्वच्छता के कायल– मार्कण्डेय का व्यक्तित्व पहले से ही स्वच्छता और साफ सुथरेपन का कायल रहा है। कुरुचि और गंदगी से घृणा करने वाले मार्कण्डेय के आगमन से मनहूसी तक गायब हो जाती थी। अपना प्रत्येक काम वे अत्यधिक सफाई और स्टाइल से करते। उनके साफ सुथरे, लुभावने और आकर्षक व्यक्तित्व को देखकर उनकी मित्रमंडली को किसी रोमांटिक नायक की कल्पना हो आती थी। परन्तु असल में मार्कण्डेय ऐसी बातों के विरोधी थे। उनकी मित्रमंडली को लगता था कि 'एक मन का बिगड़ा छोकरा, जो फैशन करने के उद्देश्य से साहित्य की ओर आया है और जो यूनिवर्सिटी से निकलने पर एक अच्छी नौकरी पाकर सुख–सुविधा से संतुष्ट हो जायेगा। परन्तु आगे चलकर जब मार्कण्डेय ने नौकरी आदि के प्रलोभन से दूर रहते हुए व्यावहारिक तथा साहित्यिक जीवन में संघर्ष को ही स्वीकार किया तो उनका अनुमान भ्रम साबित हुआ।

मार्कण्डेय का व्यक्तित्व एक स्वाभिमानी, सरल और निरन्तर संघर्षशील लेखक का व्यक्तित्व है। उन्होंने अपनी प्रखर क्षमता और योग्यता के बावजूद अनेक स्वर्णिम अवसरों को ठोकर मारी और साहित्य–सेवा के जरिए जनसेवा को ही जीवन का सार माना। मार्कण्डेय ने पूरी जिंदगी केवल लिखा है और साहित्य तथा विचार के क्षेत्र में सार्थक हस्तक्षेप किया। मार्कण्डेय को जीवन में केवल चार बातों की भूख रही, पान, कॉफी, स्वादिष्ट भोजन और पुस्तक। इस बात से ही उनके व्यक्तित्व की सादगी और गरिमा का पता चल जाता है।

(छ) ग्रामीण जीवन के लिए लगाव– मार्कण्डेय ने अपने जीवन में केवल एक सपना देखा ग्रामीण भारतीय सर्वहारा समाज का शाश्वत सुख। उसी की निर्मित और स्थापना के लिए अपने लेखन के जरिए वे निरन्तर प्रयत्नशील रहे। भारत का गाँव उनकी रग–रग में रचा बसा था। गाँव तथा वहाँ का जीवन ही उनके साहित्य की आत्मा है। क्योंकि गाँव में ही उन्होंने जीवन की पहली सांस ली है। वहीं पर वे पले बढ़े हैं। गाँव तथा वहाँ के किसान–मजदूरों का जीवन उनका सुख–दर्द, हर्ष– विषाद, शोषण–अत्याचार, दमन–उपेक्षा आदि को उन्होंने बहुत समीप से देखा है। उनके ग्रामीण अनुभवों के संबंध में वरिष्ठ कथाकार अमरकांत एक स्थान पर लिखते है।'' गाँव के लोगों का उसको जितना अत्मीय अनुभव है उतना कम लोगों को होगा। एक एक व्यक्ति का खाका उतारकर रख देता है। उन लोगों की बातें करते समय उसके स्वर में संगीत बहता है और उस संगीत के लय और ताल को भी महसूस किया जा सकता है।'' पाठक जब भी उनके 'अग्निबीज' उपन्यास अथवा 'गुलरा के बाबा', 'सवरइया', 'कल्यानमन', 'हंसा जाई अकेला', 'भूदान', 'दोने की पत्तियाँ' जैसी कहानियों को पढ़ते हैं, तब उनके ग्राम राग को अवश्य अनुभव करते हैं।

(ज) सामाजिक–राजनीतिक कार्यकर्ता– मार्कण्डेय का व्यक्तित्व अपने समय की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, परिस्थितियों के प्रति एक साथ जागरूक और उत्तरदायी लेखक का व्यक्तित्व रहा है। एक सफल लेखक बनने से पूर्व विद्यार्थी–दशा से ही उनमें राजनीति के प्रति आकर्षण था। यही कारण है कि प्रारम्भ में गाँधी जी तथा गाँधीवादी विचारधारा और बाद में आचार्य नरेन्द्र देव तथा उसकी कांग्रेस समाजवादी पार्टी से जुड़ गए और अभावग्रस्त तथा

शोषित ग्रामीणों के लिए कार्य करने लगे। उनका संबंध छात्र आन्दोलन से रहा है और वे सजग रूप में प्रगतिशील संगठन और वामपंथी दलों के निकट रहे।'' उनमें वक्तव्य का गुण भी विकसित हो चुका था। अतः प्रतापगढ़ में महाविद्यालयीन पढ़ाई के दरमियान पंडित नेहरू के स्वागत का प्रसंग हो या बाद में छात्रों के शिविर का आयोजन हो, हर आयोजन के कर्ता–धर्ता मार्कण्डेय ही हुआ करते थे। अब वे एक अच्छे कार्यकर्ता बन गए थे। छात्रावस्था में ही खद्दर पहने मार्कण्डेय कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के कार्यक्रमों में सुदूर गाँवों में जाते। लोग उनके रूप में एक नवयुवक को पहले कौतूहल की निगाह से देखते, परन्तु जब मंच पर खड़े मार्कण्डेय का धारा प्रवाह भाषण सुनते, तो मंत्र–मुग्ध हो जाते। इस तरह युवावस्था में ही एक सफल कार्यकर्ता के गुण उनमें दिखने लगे थे, परन्तु आगे किसी ठोस वैचारिक आधार के अभाव में उन्होंने लेखक बनना अधिक श्रेयस्कर समझा इस संबंध में वे कहते हैं– ''उस समय हमारे आस–पास कोई संगठन होता तो मैं लेखक न बनकर एलिटेटर (आन्दोलक) बन गया होता।''

उपर्युक्त सभी विशेषताओं के साथ–साथ मार्कण्डेय के व्यक्तित्व में गंभीरता, स्पष्टवादिता, स्वाभिमान, आत्मविश्वास, कल्पनाशीलता, मिलनसारिता, भावुकता, देशप्रेम आदि अनेक पहलुओं के दर्शन होते हैं जो उन्हें अन्यों से भिन्न स्थापित करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. पान–फूल, (कहानी संग्रह), मार्कण्डेय, नवहिंद पब्लिकेशन, हैदराबाद, प्रथम संस्करण, 1954
2. महुए का पेड़ (कहानी संग्रह), मार्कण्डेय, लहर प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–1955
3. हंसा जाई अकेला (कहानी संग्रह), मार्कण्डेय, नया साहित्य प्रकाशन, 2–डी, मिन्टो रोड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–1957
4. भूदान (कहानी संग्रह), मार्कण्डेय, नया साहित्य प्रकाशन, 2–डी, मिन्टो रोड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–1957
5. माही (कहानी संग्रह), मार्कण्डेय, नया साहित्य प्रकाशन, 2–डी, मिन्टो रोड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–1962
6. सहज और शुभ (कहानी संग्रह), मार्कण्डेय, नया साहित्य प्रकाशन, 2–डी, मिन्टो रोड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–1964
7. बीच के लोग (कहानी संग्रह), मार्कण्डेय, नया साहित्य प्रकाशन, 2–डी, मिन्टो रोड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–1975
8. मार्कण्डेय की कहानियाँ, मार्कण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, 15–ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद–1, प्रथम संस्करण–2002
9. सेमल के फूल (उपन्यास), मार्कण्डेय, नया साहित्य प्रकाशन, 2–डी, मिन्टो रोड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–1956
10. अग्निबीज (उपन्यास), मार्कण्डेय, नया साहित्य प्रकाशन, 2–डी, मिन्टो रोड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–2002
11. सपने तुम्हारे थे, मार्कण्डेय, (काव्य संग्रह), नया साहित्य प्रकाशन, 2–डी, मिन्टो रोड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–1960

12- कहानी की बात (आलोचना), मार्कण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद–1, प्रथम संस्करण–1984